"वे मुस्काते फूल नहीं, जिनको आता है मुरझाना।
वे तारों के दीप नहीं, जिनको भाता है बुझ जाना।।"
(महादेवी वर्मा)

महिला शक्ति बोध

Women Empowerment Cognition

सम्पादक : डॉ. संध्या सचान

श्री शक्ति डिग्री कालेज

साँखाहरी, घाटमपुर, कानपुर नगर

Shri Shakti Degree College

Sankhahari, Ghatampur, Kanpur Nagar

Website : www.ssdckanpur.org

E-mail : info.ssdc@gmail.com

क्रमणिका

1.	महिला शक्ति बोध		पेज नं0
2.	महाविद्यालय पत्रिका		1
3.	संपादकीय		2
4.	शुभकामना संदेश		3–8
5.	चित्रवीथिका		9
6.	महिला शक्तिबोध		10
7.	ग्रामीण क्षेत्र में घरेलू महिलाओं हेतु अतिरिक्त आय के साधन		11
8.	स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं सम्पन्नता		12
9.	महिला सशक्तिकरण के प्रमुख कार्यक्रम एवं योजनाएं		13–14
10.	नारी के बहुमुखी विकास हेतु पूर्व स्वतंत्रता की आवश्यकता		15–16
11.	सच ही तो है ?	डॉ0 संध्या सचान (असि0 प्रो0 हिन्दी)	17
12.	नारी सशक्तिकरण	डॉ0 मन्जू अग्निहोत्री (असि0 प्रो0 रसायन विभाग)	18
13.	आर्थिक सशक्तिकरण : सफल उद्यमी बनने के कुछ गुण	ज्योत्सना अवस्थी (आर्ट एण्ड क्राफ्ट)	19–20
14.	महिला एवं विकास	दीपिका त्रिवेदी (असि0 प्रो0 गृह विज्ञान)	21
15.	नारी सशक्तिकरण	संध्या शुक्ला (मनोचिकित्सक)	22
16.	5 Ways to Improve the Girls Education Status in Rural Area	Monika Gupta (Assist. Prof. Home Science)	23-24
17.	नारी के विरूद्ध अपराध	ज्ञान भारतीय (बी0ए0 तृतीय वर्ष)	25
18.	महिला सशक्तिकरण	दीक्षा पाल (बी0टी0सी0 प्रथम वर्ष)	26
19.	नारी शक्ति	अंकिता सचान (बी0टी0सी0 प्रथम वर्ष)	27–28
20.	महिला सशक्तिकरण	स्वाती देवी (बी0टी0सी0 प्रथम वर्ष)	29
21.	महिला सशक्तिकरण एवं वर्तमान परिदृश्य	सारिका पाल (बी0टी0सी0 प्रथम वर्ष)	30
22.	महिला सशक्तिकरण क्यों आवश्यक है	शबाना खातून (बी0टी0सी0 प्रथम वर्ष)	31
23.	ग्रामीण क्षेत्रों मे महिला शिक्षा की आवश्यकता	अंकिता मिश्रा (बी0एड0 प्रथम वर्ष)	32
24.	Wrong Number	Priyanka Umrao (B.A. III)	33-34
25.	नारी अभिशाप नहीं वरदान नहीं है।	गरिमा देवी (बी0ए0 तृतीय वर्ष)	35–36
26.	अंश और वंश	राखी पटेल (बी0एड0 प्रथम वर्ष)	37
27.	महिला सशक्तिकरण	अंजली सचान (बी0टी0सी0 प्रथम वर्ष)	38
28.	स्त्री शक्ति	अल्मास खांन (बी0सी0ए0 तृतीय वर्ष)	39–40

''महिला शक्तिबोध पत्रिका''

महाविद्यालय पत्रिका

2016–17

संरक्षक/परामर्श :– श्री रमेश चन्द्र त्रिवेदी (संस्थापक)

संस्करण :–द्वितीय

संपादक :डॉ0 संध्या सचान (असि.प्रो0)

सह संपादकः– ज्योत्सना अवस्थी

सहयोगी :–अनीता त्रिपाठी, पूनम उमराव,

अनुराधा गुप्ता, संध्या शुक्ला।

प्रकाशक :–ऐन्द्री समिति, श्री शक्ति डिग्री कालेज

साँखाहरी, घाटमपुर, कानपुर नगर–209206

प्रकाशन वर्षः–2016–17

छात्रा सहयोगीः– अंजली सचान, प्रतीक्षा, गरिमा, सबीना, राखी

प्रियंका, ज्ञात भारती, साक्षी, अभिमंजय, अंकिता।

संपादकीय

माँ शक्ति के आशीर्वाद एवं अनुकम्पा से एक बार पुनः 'महिला शक्ति बोध' के साथ मैं आके समक्ष उपस्थित हूँ। निश्चय ही देखा जाए तो महिला सशक्तिकरण का आन्दोलन बहुअर्थी है। यह सतत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया है। जिसमें स्त्री को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक कार्यों में को बराबरी का अधिकार दिलाने की मांग की जाती है। जैसे महिला को स्वयं द्वारा निर्णय लेना, अपनी बात को द्रढ़तापूर्वक रखने का अधिकार, सही निर्णय लेने की क्षमता एवं संसाधनों की उपलब्धता का होना, विकास प्रक्रिया में सहभागिता, राजनैतिक, शैक्षिक एवं विधिक शक्ति में प्रगति करना आदि महिला सशक्तिकरण के अवयव है। महिलाओं के आर्थिक विकास, स्वालम्बन, एवं चेतना के विकास के लिये पत्रिका द्वारा किये गये कार्य जिनमें 'स्वच्छता अभियान', 'बेटी बचाओ' 'बेटी पढ़ाओ', 'कुपोषण निवारण' एवं महिलाओं के आर्थिक विकास हेतु 'महिला स्वरोजगार' जैसे कार्यक्रमों को ग्रामीण एवं महाविद्यालय स्तर पर सराहना मिली। महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु आवश्यक है कि शिक्षा का अधिकार सभी जातियों एवं वर्गों की महिलाओं एवं बालिकाओं को एक समान, रूप से प्राप्त हो। जिससे वे उन मान्यताओं, रूढ़ियों, परपंराओं एवं अंधविश्वासों से ऊपर उठ सके जिनमें वे युगों–युगों से जकड़ी हुयी है। 'महिला शक्ति बोध' के माध्यम से हमारा उद्देश्य ग्रामीण समाज की महिलाओं का सामाजिक दायरा, आर्थिक स्वालम्बन, राजनैतिक सहभागिता, शैक्षणिक विकास एवं स्वास्थ्य संबंधी स्तर को बढ़ाना है, जागरूक बनाना है। 'महिला शक्ति बोध' के पूर्व के प्रयासों में त्रुटियां अवश्य ही हुयी होगी किन्तु 'सार–सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाय'' की परंपरा पर विश्वास करते हुए जो सहयोग एवं विश्वास मिला मैं उसके लिए महाविद्यालय परिवार, ग्रामीण क्षेत्र एवं छात्र/छात्राओं की आभारी हूँ। इसी क्रम को विस्तार देते हुए 'महिला शक्ति बोध' का दूसरा अंक समर्पित कर रही हूँ। इस आशा एवं विश्वास के साथ कि पूर्व की ही भाँति इस अंक को भी आप सभी की सराहना एवं सहयोग अवश्य ही प्राप्त होगा और यह महिलाओं के विकास का संबल बनेगी।

शुभकामना संदेश

"महिला शक्ति बोध" के द्वितीय अंक का प्रकाशन महाविद्यालय के लिये हर्ष एवं गर्व का विषय है जिसके लिये इस पत्रिका की सम्पादक सहित प्रकाशन समिति के समस्त सदस्यों को हार्दिक बधाईयाँ प्रेषित करता हूँ। महिला सशक्तिकरण का अभाव विश्वस्तरीय समस्या है जिसके निवारण के लिये अन्य देशों के साथ–साथ हमारा देश भी सफल सहभागिता सुनिश्चित कर रहा है। अपने राष्ट्र के इस कार्य में हमारा महाविद्यालय महिला शक्ति बोध पत्रिका के माध्यम से अपना सहयोग प्रदान करता है। हमारा परामर्श है कि ग्रामीण क्षेत्रों के परिवारों से निकटतम एवं निरंतर सम्बन्ध बनाते हुये महिलाओं को उनके आर्थिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति पूर्ण रूप से जागृत करें। द्वितीय अंक के प्रकाशन के अवसर पर हम पनी शुभकामनायें देते हैं तथा उत्तरोत्तर क्रियात्मक प्रगति के लिये मंगलकामनायें करते हैं।

रमेश चन्द्र त्रिवेदी

(संस्थापक)

श्री शक्ति डिग्री कालेज

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि श्री शक्ति डिग्री कालेज साँखाहरी, घाटमपुर, कानपुर नगर अपनी वार्षिक पत्रिका 'महिला शक्ति बोध' का द्वितीय पुष्प प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में ग्रामीण महिलाओं को प्रोत्साहित करने वाले कार्यों को पर्याप्त स्थान दिया जायेगा। जिससे महिला सशक्त हो सकें और अपना सर्वागींण विकास कर सकें । मैं महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'महिला शक्ति बोध' के सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ।

विनय त्रिवेदी

(प्रबन्धक)

श्री शक्ति डिग्री कालेज

शुभकामना संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि श्री शक्ति डिग्री कालेज साँखाहरी, घाटमपुर, कानपुर नगर 'महिला शक्ति बोध' नामक पत्रिका का वार्षिकांक प्रकाशित कर रहा है। इस प्रकाशन से महिलाओं की प्रतिभा को रचनात्मक दिशा देने का अवसर प्राप्त होगा। महिलाओं के विकास के लिए यह आवश्यक है कि महाविद्यालय से पत्रिका का इसका प्रकाशन अनवरत प्रति वर्ष होता रहे। महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नयन हेतु पत्रिका अपना योगदान कर सकेगी। इसी कामना के साथ।

Trivedi

ले० विवेक त्रिवेदी

(उपप्रबन्धक)

श्री शक्ति डिग्री कालेज

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि एन्द्री समिति अपने दायित्वों का सफलता पूर्वक संचालन एवं निर्वाहन कर रही है। मैं 'महिला शक्ति बोध' पत्रिका के द्वितीय संस्करण की सफलता हेतु अपनी शुभकामनायें प्रेषित करती हूँ। निश्यच ही महिला सशक्तिकरण एक ऐसा विषय है जिसने समाज में हलचल मचा दी है।

मैं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

डॉ0 भावना शर्मा

(प्राचार्या)

श्री शक्ति डिग्री कालेज

शुभकामना संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि 'महिला शक्ति बोध' पत्रिका ग्रामीण महिलाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिये सहायक होगी। साथ ही महिलाओं को आत्मनिर्भरता की ओर सक्रिय करने में कारगर होगी। मै महाविद्यालय और पत्रिका की 'ऐन्द्री' समिति को शुभकामनाएं देता हूँ कि यह अपने प्रयासों में फलीभूत हो।

ज्ञानेन्द्र कुशवाहा

ग्राम प्रधान सांखाहरी,

कानपुर नगर

शुभकामना संदेश

यह हर्ष एवं प्रसन्नता का विषय है कि ''महिला शक्ति बोध'' के रूप में ''महिला सशक्तिकरण का आन्दोलन सक्रिय है। पत्रिका निश्चय ही महिलाओं के विकास उनकी आत्मनिर्भरता एवं स्वालम्बन को संबल प्रदान करेगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ–

सुशील कुमार

ग्राम प्रधान बावन

चित्रवीथिका

ग्राम अम्बरपुर में स्वच्छता अभियान एन्द्री समिति के साथ डॉ0 संध्या सचान

ग्राम प्रधान श्रीमती शान्ति मिश्रा के घर का भ्रमण एन्द्री समिति के साथ

ग्राम अम्बरपुर में स्वच्छता अभियान के साथ एन्द्री समिति

महिला सशक्तिकरण के अन्तर्गत बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं रैली में एन्द्री समिति

महिला जागरूकता एवं स्वरोजगार कार्यक्रम में साथी शिक्षिकाओं के साथ एन्द्री समिति

प्रियंका देवी बी0ए0 तृतीय वर्ष रंगोली बनाते हुये

''महिला शक्ति बोध''

'महिला शक्ति बोध' श्री शक्ति डिग्री कालेज, सांखाहरी, घाटमपुर, कानपुर नगर द्वारा ग्रामीण महिलाओं की सहायता हेतु किया गया प्रयास है। जिसमें शिक्षित, अल्प शिक्षित, आर्थिक रूप से कमजोर जरूरतमंद महिलाओं को जागरूक करना है। यह 'महिला सशक्तिकरण का एक ऐसा आन्दोलन है जिसमें महिलाओं के अस्तित्व उसके स्वालम्बन, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक अधिकारों को स्थान दिया गया है। देखा जाए तो भारत की कुल आबादी का 70 प्रतिशत भाग गांवों में निवास करता है। जहाँ अधिकांस कार्य खेती (कृषि कार्य) बच्चों की देखभाल, उनकी परिवरिश करने, वृद्धों की सेवा करने, घर को सजाने सवांरने जैसे महत्वपूर्ण कार्य महिलाओं द्वारा ही किये जाते हैं। फिर भी इनके कार्यों को निम्न दर्जे का और बिना वेतन का माना जाता है। महिलाएं अपने श्रम को समझे और चेतना सम्पन्न बने इसके लिये आवश्यक है कि वे शिक्षित हो ताकि घर परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते हुए आर्थिक स्वालम्बन प्राप्त करें और अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक हों। उन्हें पौष्टिक भोजन प्राप्त हो, साफ–सफाई और स्वास्थ्य के प्रति सचेत हो, और कुपोषित न हो। वर्तमान समय में देखा जाए तो बालिका भ्रूण हत्या का अपराध शहरों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी तेजी फल रहा है। जिसे कई बार महिला न चाहते हुए भी करने के लिये विवश हो जाती है। जबकि महिला का यह कदम स्वयं उसके अस्तित्व की पहचान के लिये घातक है। 'बालिका भ्रूण हत्या' के साथ ही वह अपने मातृत्व की भी हत्या कर देती है। महिलाओं को इस बात के लिये सचेत होना है कि महिला होने का मतलब अधिकारों से वंचित होना, अवसरों की कमी, आवाज का दबाया जाना, सामाजिक सरोकारों से दूर होना नही है। बल्कि आवश्यकता है कि महिलाएं स्वयं के प्रति जागरूक हों 'बालिका भ्रूण हत्या', महिला उत्पीड़न, पर रोक लगे। महिला शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति सचेत हो बालिका कुपोषण में सुधार हो। महिला के विकास एवं उन्नयन में कमी का मुख्य कारण है गतिहीनता एवं जागरूकता में कमी। जब महिलाएं स्वयं के प्रति जागरूक होगी तभी उन्नति के व्यापक फलक को स्पर्श कर पाएगी। 'महिला शक्ति बोध' के अन्तर्गत महिला विकास के विभिन्न मुद्दे हैं जैसेः–

- **बालिका भ्रूण हत्या।**
- **महिला उत्पीड़न।**
- **पर्यावरण सुरक्षा।**
- **शराब बंदी।**
- **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।**
- **स्वच्छता।**
- **शिक्षा।**
- **कुपोषण।**
- **महिला जागरूकता**
- **महिला स्वरोजगार आदि।**

ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू महिलाओं हेतु अतिरिक्त आय के साधन

आज पुरुषों के साथ–साथ महिलायें भी हर क्षेत्र में सहभागिता निभा रही हैं और अपना व परिवार का भरण–पोषण कर रही हैं परन्तु किसी के पास यह अंदाजा लगा पाना मुश्किल है कि जो–महिला आफिस दफ्तर नहीं जाती जो महिला सास–ससुर के घर पर रहकर ही सेवा करती है परिवार व पालन पोषण करती है। वह गृहणी भी अपनी दिनचर्या में से खाली समय निकाल कर 'अतिरिक्त आय' की व्यवस्था भी कर सकती हैं। अपने छोटे से छोटे हुनर को एक प्रतिष्ठित व्यवसाय का रूप प्रदान कर सकती है। परिवार में जब एक महिला विवाहित होकर आती है तो कहाँ जाता है कि लक्ष्मी के रूप में गृह लक्ष्मी पधारी है तो क्या हर उस महिला को जिसे गृह लक्ष्मी की संज्ञा दी जाती है, फर्ज नहीं बनता कि वह घर की आमदनी के साथ कुछ अतिरिक्त आमदनी के स्रोत सुलभ करा सके। हम सभी जानते हैं कि धन की कमी कई कमियों का कारण बनती है पर धन की सम्पन्नता हर क्षेत्र में सम्पन्नता प्रदान करती है। इसलिये प्रत्येक गृहणी अपने हुनर को अपनी ताकत में परिवर्तित करना सीखें, अपने कौशलों से दूसरों को निखारना सीखे, अपनी हिम्मत से घर–परिवार व गाँव को सम्पन्नता प्रदान करना सीखे इन सबके साथ ग्रामीण क्षेत्रों की घरेलू महिला अपने छिपे हुनर को तरासने के साथ ही निम्नलिखित रूप से विख्यात हो सकती है :–

♠**कुशलता–महिलाओ के हुनर –** पाक कला, सिलाई–कढ़ाई, साज–सज्जा, शिशु–देख–रेख आदि कौशलों को निखारना।

♠**आत्मनिर्भरता–**परिवार व स्वयं को सहारा देकर (समर्पण व आर्थिक रूप से।)

♠**घर/परिवार की सम्पन्नता–**विपरीत परिस्थियों में शक्ति के रूप में सुरक्षा प्रदान करना व खाली समय के सदुपयोग द्वारा आयोजित आय सुलभ कराना।

♠**लघु व्यवसाय–**अपने साथ–साथ आस–पड़ोस की महिलाओं को जीवकोत्पार्जन के अवसर उपलब्ध करायें।

♠**व्यापार–**लघु व्यवसाय से तैयार माल का वितरण बाहर के शहरों व अन्य गाँवों में करके।

♠**गाँव की पहचान–**अपनी कुशलता को व्यापार का रूप देकर अपने गाँव को पहचान प्रदान करना।

♠**देश में नाम–**अपने व्यापार से निर्मित प्रोडक्ट की शुद्धता व सुलभता के कारण देश में नाम कमाना।

ग्रामीण घरेलू महिलाये निम्नलिखित कार्यों को व्यवसाय के रूप में प्रारम्भ कर सकती है –

1. हस्त शिल्प कार्य। **2.** सिलाई, कढ़ाई, बुनाई। **3.** पुष्प सज्जा, आर्टीफिशियल पुष्प निर्माण।

4. हेल्दी टिफिन तैयार करना। **5.** होम मेड चॉकलेट, केक, आचार, मुरब्बा, पापड़ आदि का निर्माण।

6. खाद्य व फल संरक्षण। **7.** सींको व व्यवसाय–डलियाँ, पंखे, चटाई, आदि बनाना।

8. सजावटी सामग्री– गुड़िया, गुलदस्ते, पेंटिग आदि का निर्माण। **9.** ज्वेलरी मेकिंग।**10.** ब्यूटी पार्लर खोलना।

स्वास्थ्य स्वच्छता एवं सम्पन्नता

स्वास्थ्य जीवनकी अमूल्य निधि है यदि हमारे पास स्वास्थ्य नहीं तो जीवन के हर सुख–साधन हमारे लिये व्यर्थ है क्योंकि हम जब स्वयं स्वस्थ्य रहेगे तो हमारा मन भी प्रसन्न रहेगा और प्रसन्न व्यक्ति ही आस–पास के वातावरण को सुन्दर व सजीवता प्रदान कर सकता है। ''स्वास्थ्य अर्थात रोगों की अनुपस्थिति'' स्वास्थ्य के साथ शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा सांवेगिक स्थितियों को जोड़ा गया है। अतः यह भी कटु सत्य है कि यदि आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ्य है तो मानसिक, सामाजिक, तथा सांवेगिक स्थितियाँ भी असन्तुलित हो जाती है और अस्वस्थ्य व्यक्ति अपने स्वयं, समाज, राष्ट्र के लिये अभिशाप बन कर रह जाते हैं क्योंकि वो अस्वस्थ के कारण न तो स्वयं का विकास न ही देश का विकास कर पाते हैं और जीवन भर दूसरों के ऊपर बोझ बनकर रह जाते हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिये स्वच्छता का महत्वपूर्ण योगदान है यह स्वच्छता न सिर्फ आस–पास के वातावरण में होनी चाहिये बल्कि व्यक्तिगत शारीरिक स्वच्छता, मानसिक स्वच्छता, घर व आस–पड़ोस की स्वच्छता भी परम आवश्यक है। स्वच्छता सिर्फ सुन्दरता के लिये ही जरूरी नही है बल्कि स्वच्छता स्वास्थ्य के लिये भी परमावश्यक है जैसा कि हम हर साल देखते है कि हमारे देश में लाखों लोगों की मृत्यु सिर्फ गन्दगी के कारण फैलने वाले रोगों गन्दगी से ही होती है। परन्तु यदि हर शारीरिक, मानसिक तथा पर्यावरणीय रूप से स्वच्छ वातावरण में निवास करेगें तो हमारा उत्तम स्वस्थ्य स्वाभाविक रूप से ही हमें प्राप्त हो जायेगा। जैसा कि हमारे पूर्वजों का कहना है कि साफ–सुथरे व स्वच्छ स्थान पर सदा ही लक्ष्मी का वास होता है और हम भी यह देखते है जहाँ स्वच्छता है वहाँ सम्पन्नता अपने आप चली आती है क्योंकि स्वच्छता से हमारी स्वस्थ्य सुरक्षा भी होती है और मन प्रसन्न रहता है यदि प्रसन्न मन व स्वस्थ्य शरीर व निरोगी काया व स्वच्छ पर्यावरण हमारे पास होगा तो हम हमेशा कुछ न कुछ विकास शील कार्य करते रहेंगे, खाली बैठे हमे स्वयं में चैन नही मिलेगा और सम्पन्नता स्वयं चलकर हमारे पास आयेगी।

महिला सशक्तिकरण के प्रमुख कार्यक्रम व योजनाएँ

1. कामकाजी महिलाओं के लिये हॉस्टल–1972–73–

कभी पारिवारिक मजबूरियों के कारण आर्थिक परिस्थितयों के कारण, नौकरी, पेशे वाली महिलाओं को घर से बाहर अकेले रहना पड़ता है। इन महिलाओं सहित बच्चों के देखभाल हेतु हॉस्टल निर्माण या विस्तार योजना का आरम्भ किया गया। स्कूली शिक्षा के बाद व्यावसायिक पाठ्यक्रम पूरा कर रही महिलाओं, विधवाओं, तलाकशुदा व अकेली कामकाजी महिलाओं के सुरक्षित और किफायती आवास सुविधा उपलब्ध करायी जाती है।

2. रोजगार और प्रशिक्षण के लिये सहायता देने वाले कार्यक्रम 1986–87–

इस योजना का मुख्य उद्देश्य महिलाओं में आर्थिक स्वालम्बन लाना है। इस योजना के अंतर्गत महिलाओं को परम्परागत क्षेत्र में उनके कौशलों में सुधार कर उनको कृषि पालन, हथकरघा, हस्तशिल्प, खादी ग्रामी उद्योग, रेशम कीट पालन व सामाजिक वानिकी आदि का प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है।

3. स्वयं सिद्धा– 12 जुलाई 2001–

इस योजना का उद्देश्य महिलाओं को सामाजिक व आर्थिक रूप में सशक्त बनाना है।

4. राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण नीति 2001–

इसके अन्तर्गत भविष्य के लिये महिलाओं की जरूरतों का समाधान करने आदि उनकी उन्नति विकास और सशक्तिकरण के विषय में अभिव्यक्त लक्ष्य सहित एक कार्ययोजना के तौर पर बनायी गयी है।

5. स्वधारा –2001–02–

इस योजना के अंतर्गत परित्यक्त महिलायें, निराश्रित महिलाएं, प्राकृतिक आपदा तथा आंतकी गतिविधियों से पीड़ित महिलाओं को भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य देखभाल परामर्श व्यवस्था की सुविधा प्रदान की जाती है।

6. स्वर्णिम योजना –2002–

भारत सरकार द्वारा पिछड़े वर्ग की महिलाओ हेतु जो गरीबी रेखा के नीचे के परिवारों की है उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम बनाने हेतु 50 हजार तक ऋण उपलब्ध कराया जाता है पर व्याज दर के साथ ऋण वापस करने हेतु 12 वर्ष की लम्बी अवधि तय की गयी है।

7. आशा योजना–11 फरवरी–2005–

इस योनजा के अंतर्गत ग्रामीण महिलाओं की स्वास्थ्य की देखभाल करने, गर्भवती व प्रसूति महिलाओं को आवश्यक जानकारी व सरकारी सहयोग उपलब्ध करने हेतु प्रत्येक गाँव में स्थानीय एक महिला कर्मचारी नियुक्त की जाती है जिसे 'आशा बहु' कहते है ये आशा बहुये उसी गाँव की होती है जहाँ उनको नियुक्त किया जाता है।

8. बालिका समृद्धि योजना–20 अक्टूबर–1997–

इस योजना के अंतर्गत 15 अगस्त 1997 के बाद जन्मी बालिकाओं के परिवार को ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में (गरीबी रेखा के नीचे वाले परिवार) बालिका के जन्म के समय रु0 500/– की धनराशि (केवल दो लड़कियों तक) देने का प्रावधान किया गया है। इस बालिका के स्कूल जाने पर भी पहली कक्षा पर रु0 300 /– तथा 10 वीं कक्ष पर 1000 की छात्रवृत्ति भी प्रदान की जयेगी।

9. परिवार परामर्श केन्द्र–1984–

केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड के अधीन स्वैच्छिक संगठनों के मध्यम से चल रही इस योजना के अंतर्गत पारिवारिक असहयोग की समस्या से जूझ रही महिलाओं/बालिकाओं को पुनर्वास सम्बन्धी सहायता उपलब्ध करायी जा रही है।

10. निःशुल्क बालिका शिक्षा (इन्दिरा गाँधी इकलौती बालिका छात्रवृत्ति योजना) 22 सितम्बर 2005–

केन्द्र सरकार द्वारा बालिकाओं में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये माता–पिता की इकलौती पुत्री को छठवी से बारहवीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की गयी है तथा स्नातक स्तर पर (नॉन मेडिकल व नॉन इंजीनियरिंग) के लिये प्रतिमाह रु0 500/– तथा मेडिकल व इंजीनियर के लिये रु0 1000 की छात्रवृत्ति का प्रावधान है तथा मान्यता प्राप्त संस्थान से परास्नातक शिक्षा प्राप्त करने हेतु रु0 2000/– प्रतिमाह छात्रवृत्ति मिलने का प्रावधान है।

11. जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम 1 जून 2011–

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (NIHFW) द्वारा गर्भवती महिलाओं तथा शिशुओं को बेहतर स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध करायी जाती है तथा साथ ही इनको मुफ्त दवाईया, इलाज, खाद्य तथा जरूरत पड़ने पर मुफ्त रक्त दिया जाता है।

12. किशोरी शक्ति योजना–2001–

केन्द्र सरकार द्वारा (ICDS) के अन्तर्गत किशोरी बालिकाओं के लिये विशेष रूप से स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और प्रशिक्षिण की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु इस योजना को दो भागों में बाँटा गया है :–

अ. गर्ल–टू–गर्ल 11 से 15 वर्ष की बालिकाओं के लिये तथा

ब. बालिका मण्डल 15–18 वर्ष की किशोरियों के लिये।

13. जननी सुरक्षा योजना– 01 अप्रैल 2005–

इसके प्रमुख उद्देश्य गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य केन्द्र में पंजीकरण तथा शिशु जन्म उपरान्त चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है।

14. जीवन भारती महिला सुरक्षा योजना 8 मार्च 2003–

भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा 18–50 वर्ष की आयु की ग्रामीण महिलाओं को गम्भीर बीमारियों एवं उनके शिशुओं को जन्मजात अपंगता में सुरक्षा है।

15. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना–

1 मई 2016 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले से प्रारम्भ। इसके अर्न्तत पांच उद्देश्य है। इसमें बी0पी0एल0 कार्ड धारकों को गैस एल0पी0जी0 सिलेंडर उपलब्ध कराना।

नारी के बहुमुखी विकास हेतु पूर्ण स्वतन्त्रता की आवश्यकता

इस संसार में जो भी जन्म लेता है चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री प्रत्येक स्वतंत्र रूप से ही इस पृथ्वी पर जन्म लेते है। लेकिन परिस्थितियाँ पग–पग उनके सामने कठिनाइयाँ उत्पन्न करती है और उन्हें इस तरह बना देती है जैसे जंजीरों में जकड़ा हुआ व्यक्ति/हर व्यक्ति की स्वतंत्रता उसक जन्म सिद्ध अधिकार होता है। नारी के लिये तो स्वतंत्रता और भी आवश्यक है क्योंकि वह नारी एक परिवार समाज तथा देश की नींव होती है अतः नारी की बहुमुखी विकास के लिये उसे पूर्ण स्वतंत्रता का अधिकार मिलना अत्यन्त आवश्यक है। स्वतंत्रता से पहला तात्पर्य उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता से है भारत में आज भी नारी अनेक स्थानों पर अपने व्यक्तिगत अधिकारों से वंचित है उसे अपनी रूचि और आवश्यकतानुसार नही बल्कि उसे समाज की इच्छानुसार जीवन व्यतीत करना पड़ता है। वांछिक शिक्षा का अधिकार तथा स्वतंत्रता भी नारी के व्यक्तित्व के विकास के लिये आवश्यक है। पारिवारिक क्षेत्र में शिक्षित तथा स्वतंत्र विचारो वाली स्त्री (नारी) अपने कर्तव्यों का समुचित निर्वाह कर सकती है। स्वतंत्र नारी ही एक आदर्श परिवार का निर्माण कर सकती है तथा उस आदर्श परिवार से ही स्वस्थ मानसिकता वाले नागरिकों का उदय होगा। आर्थिक स्वतंत्रता भी नारी के लिये उतनी ही आवश्यक है जितनी की शैक्षिक तथा वैचारिक स्वतंत्रता। बन्धनों का होना कहीं तक ठीक है परन्तु जब यही बन्धन रूढ़िवादी हो जाए तथा समय के साथ परिवर्तित न हो तो यह विनाशकारी तथा अहितकारी हो जाते है। नारी को ऐसे बन्धनों से स्वतंत्रता मिलनी अत्यन्त आवश्यक है। भारतीय संविधान ने इस दृष्टि से नारी को अनेक अधिकारों की स्वतंत्रता दी है जैसे– बहु विवाह, सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा आदि अनेक दुष्प्रथाएं तो अब लगभग समाप्त हो चुकी है परन्तु स्त्री भ्रूण की हत्या का नया अत्याचार देश तथा समाज पर ही नहीं अपितु नारी अस्मिता पर भी एक कलंक है इससे यह स्पष्ट है कि नारी से उसकी इच्छानुसार मातृत्व की स्वतंत्रता भी छीनी जा रही है। आज के समय में अनेक परिवारों तथा समाजों में नारी को शिक्षित तो करा दिया जाता है लेकिन फिर भी उन्हें नौकरी करने की स्वतंत्रता नहीं होती। जब नारी को अपनी शिक्षा का सदुपयोग करने की स्वतंत्रता न होगी तो वह अपना बहुमुखी विकास कैसे कर पायेगी ? देश व समाज के विकास के लिये जितनी आवश्यकता नारी शिक्षा की है उतनी ही उसे शिक्षा को सही तरीके से उपयोग करने के लिये उत्साहित करने से भी है। इसलिये नारी को प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति के लिये स्वतंत्रता दी जाए। पूर्ण रूप से स्वतंत्रत नारी ही अपना पूर्ण विकास कर सकती है। आज नारियाँ शिक्षा, राजनीति एवं समाजसेवा, धर्म, विज्ञान, आदि अन्य क्षेत्रों में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है। उन्हें मिली स्वतंत्रता ने ही उन्हें इस ऊँचाई पर अवस्थित किया है। स्त्री तथा पुरुष की भेदभाव की स्थिति भी नारी की पूर्ण स्वतंत्रता में बाधक है। नारी को इस भेदभाव की स्थिति से स्वतंत्रता मिलनी बहुत जरूरी है। पुरुष को शक्तिशाली तथा स्त्री को निर्बल मानकर उसे इस समाज से अलग कर दया जाता है। अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि नारी को उसके पूर्ण विकास के लिये पूर्ण स्वतंत्रता दी जानी अत्यन्त आवश्यक है किसी भी देश की विकसित तथा समृद्धिशाली नारी समाज में उस देश का विकसित रूप आभासित होता है अगर नारी को पूर्ण स्वतंत्रता मिलती है तो वह दिन दूर नही जब नारी अपनी प्रतिभा के बल पर

स्वतंत्रता के आधार पर समाज तथा देश को आदर्श रूप प्रदान करेगी। लैंगिक असमानता को दूर के लिये स्त्री सशक्तिकरण एक सबल उपाय माना जाता है और आज इस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। जिससे स्त्रियों को भी उनके विचारों को प्रकट करने की पूर्ण सवतंत्रता प्राप्त हो। धार्मिक सम्प्रदाय की प्रथा विशेष को छूट देने से स्त्री उत्पीड़न और शोषण की निरन्तरतर के रूप में है स्वत्रंता भारत में एक नागरिक बेड़ियों से मुक्ति पाने का अधिकार मिलना ही चाहिए। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि स्वतंत्र नारी ही वस्तुतः किसी भी परिवार समाज एवं देश की अस्मिता होती है।

''सच ही तो है''

डॉ0 संध्या सचान
विभाग हिन्दी

'स्त्री की अनथक यात्रा का
जीवित सत्य हूँ मैं
मै जब सोचती हूँ,
एक बेटी, एक बहन, बहू और पत्नी बनकर
तो बहुत सुन्दर, सुगढ़, प्यारी और आदर्शवान बना दी जाती हूँ
अपनी इच्छाओं को मारकर
अपने सपनों को भी
अपने भीतर छिपाती हूँ जब
घर की लक्ष्मी, प्यारी बेटी और भी न जाने क्या–क्या
बना दी जाती हूँ तब!
किन्तु जब मैं सोचने लगती हूँ
अपने विषय में
जैसे अपने अस्तित्व के लिये ?
अपने आत्म निर्भर होने के लिये ?
चाहने लगती हूँ निजता ? निज पहचान ?
तो अनचीन्हे से हो जाते हैं
सभी अपने ! सभी रिश्ते।।
और मैं, एक स्त्री के रूप में
हैरान परेशान देखती हूँ सभी को
सपनों की चिपचिपाहट हथेलियों में भरे
सोचती हूँ–
टूटे कोई आकाशीय तारा,
और मिले मुझे अवसर
अपनी अभिव्यक्ति का। ''

महिला 'नारी सशक्तिकरण'

डॉ0 मन्जू अग्निहोत्री

विभाग रसायन

आज हम नारी (महिला) के सशक्तिकरण पर अत्यधिक जागरूक हो चुके हैं। लेकिन वास्तव में नारी (महिला) सशक्तिकरण है क्या ? इसे हम में से बहुत से लोग भली प्रकार से समझ नही पाते हैं। जिसके कारण अनेकों भ्रान्तियाँ पैदा हो जाती हैं। अब हमें सबसे पहले यह जानना चाहिये कि सशक्तिकरण है क्या ?

1. सशक्तिकरण का अर्थ होता है कि कोई व्यक्ति अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णयों को सुचारू रूप से ले सकें।

2. अतः नारी (महिला) सशक्तिकरण से महिला सशक्त अर्थात मानसिक रूप से मजबूत हो जाती है। वास्तव में यदि हम अगर शारीरिक रूप से तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो नारी पुरुष की तुलना में अत्यधिक कमजोर होती है क्योंकि नारी में कोमलता एवं भावनात्मकता पुरुषों की तुलना में अधिक होती है। परन्तु जब महिला मानसिक रूप से मजबूत हो जाती है तो वह हर परिस्थिति से अपने को ढाल लेती है।

3. आज पूर वि‍श्व में महिलाओं और पुरुषों में समानता लाने के प्रयत्न हो रहे हैं क्योंकि ''जिस देश में जब तक नारी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं चलेगी तब तक वह देश तरक्की के शिखर पर नहीं पहुँच सकता है।

4. समाज में महिलाओं को पुरुषों की बराबरी में लाना होगा। परिवार, समाज और देश के उज्ज्वल भविष्य के लिये 'महिला सशक्तिकरण' अत्यन्त आवश्यक है।

5. इसके लिये महिलाओं के स्वच्छ एवं उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता है। जिससे वह हर क्षेत्र में अपना स्वयं का फैसला ले सके।

6. मैं उन पुरुषों से अनुरोध करती हूँ जो महिलाओं का सम्मान नहीं करते हैं। कृपया वह महिलाओं का सम्मान करें और उन्हें अपने परिवार, समाज एवं देश में सम्मानित बनाने का प्रयास करें। मैं इसी के साथ अपनी कलम को विराम देती हूँ जरूरी नही है ये सभी को पंसद आयें फिर भी घर की महिला पढ़ी लिखी सबल होगी तो परिवार सुधरेगा, समाज एवं देश तरक्की करेगा।

आर्थिक सशक्तिकरण सफल उद्यमी बनने के कुछ गुण

ज्योत्सना अवस्थी
विभाग आर्ट एण्ड क्राफ्ट

प्रत्येक व्यक्ति के पास कुछ न कुछ हुनर होता है। कुछ व्यक्ति अपने हुनर का उपयोग शौकिया तौर पर करते हैं। कुछ अपने हुनर को व्यावसायिक तौर पर अपना कर मेहनत के बल पर अपनी आजीविका चलाते हैं और आमदनी बढ़ाने के प्रयास करते हैं। ऐसे व्यक्ति उद्यमी कहलाते हैं। हम अपने आस–पास ऐसे कई लोगों का जानते हैं जिन्होंने शुरूआत में बहुत छोटे रूप में अपना काम धंधा शुरू किया था और आज सुखी और सम्पन्न जीवन बिता रहें हैं।

सफल उद्यमी के कुछ गुण :–

पूरी जानकारी :– चुने हुए रोजगार के बारे में पूरी जानकारी होना।

साहसीः– साहसी लगन के साथ अपने काम–धन्धे मे जुट जाना।

दृढ़ निश्चयी :– अपने व्यवसाय को दृढ़ता पूर्वक चलाना।

जोखिम उठाने की क्षमता :– व्यवसाय में उतार चढ़ाव आते रहते हैं। कभी–कभी धन्धा मन्दा हो जाता है। घाटा भी सहना पड़ता है इसलिये व्यवसायी को घबराना नहीं चाहिए बल्कि हिम्मत से काम लेना चाहिए।

सहनशीलता :– हर तरह के हालात को सहन करना।

व्यवहार कुशलता :– सफल व्यापारी बहुत व्यवहार कुशल होता है। क्योकि व्यवहार कुशलता से ही उस पर विश्वास जमता है।

हिसाब–किताब रखने की योग्यता :– व्यवसाय मे रोज रूपये पैसों का आदान–प्रदान करना पड़ता है। कच्चा माल खरीदना पड़ता है तैयार माल बेचना पड़ता है तथा अपना मुनाफा भी बचाना होता है अतः व्यापारी को रोजाना हिसाब–किताब लिखना चाहिए।

रोजगार के अवसर :– सिलाई सम्बन्धी इस कोर्स को करने के बाद व्यक्ति अपना रोजगार शुरू कर सकता है। व्यक्ति स्वरोजगार का समूह बनाकर भी रोजगार कर सकता है या किसी दुकान/फैक्ट्री आदि में नौकरी कर सकता है।

नौकरीः– व्यक्ति इस कोर्स को करने के बाद टेलरिंग की दुकान, रेडिमेड पोशाकें बनाने की फैक्ट्री तथा किसी निर्यात केन्द्र में कटर/टेलर/नियन्त्रक/ड्रेस डिजाइनर के रूप में नौकरी प्राप्त कर सकते हैं। या ब्यूटीपार्लर खोलकर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं।

स्वरोजगारः–

*अपने घर से ही वे अपना काम (सिलाई की दुकान) शुरूकर सकते हैं।

*अपनी दुकान/बुटिक खोल सकते हैं।
फैक्ट्री/स्कूल/जेल/अस्पताल और अन्य संगठनों तथा संस्थानों से तरह–तरह की पोशाके बनाने के आर्डर प्राप्त करके भी अपना कार्य कर सकते हैं।

समूह में रोजगारः– स्वसहायता समूह/सहकारी समिति आदि बनाकर बैंक से लोन प्राप्त करके अपनी दुकान/फैक्ट्री खोल सकते हैं। समूह की सहायता से आर्डर भी प्राप्त कर सकते हैं। प्रदर्शनी आदि लगाकर अपने माल को बेच सकते है। आर्थिक रूप से स्वावलम्बी महिला अपने परिवार तथा स्वयं के निर्णय ले सकती है दूसरों की सहायता भी कर सकती है अतः महिलाओं को आर्थिक स्वावलम्बी बनना बेहद जरूरी है।

महिला एवं विकास

दीपिका त्रिवेदी
प्रवक्ता गृह विज्ञान

भारत की नारियाँ सदियों से दबी व सतायी जा रही है। सतयुग से लेकर द्वापर तथा त्रेता युग तक सभी युगों में किसी न किसी नारी का अपमान अवश्य ही हुआ है।आधुनिक काल में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अवश्य ही महिलाओं की दशा में थोड़ा सुधार हुआ है। उनके पढ़ने लिखने, स्वास्थ्य सुरक्षा तथा खान पान पर ध्यान दिया जाने लगा है। भारत जब आजाद हुआ था तब सर्वाधिक खराब स्थिति ग्रामीण महिलाओं की थी।स्त्रियों के सम्बन्ध में एक बड़ी दुखद स्थिति यह रही है कि वह घर बाहर के सभी कार्यों को करती है। संयुक्त राष्ट्र सघं ने अपनी स्थापना 1946 के समय से ही महिलाओं की आर्थिक दशा में सुधार लाने के लिये प्रयत्न करने लगा था, भारत ने भी इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाए तथा महिला साक्षरता कार्यक्रम चलाए।महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये महिला एवं पुरुष के बीच हो रहे भेदभाव को दूर किया जाए। गरीबी, कार्यक्षेत्र में महिलाओं का शोषण न हो। इसके लिये उन्हें सशक्त सबल होना अति आवश्यक है। वर्ष 1975–85 को अर्न्तराष्ट्रीय महिला दशक घोषित किया गया। इस घोषणा के पीछे एक बड़ा उद्देश्य यह था कि महिलाओं में जागृति आए। वे जागरूक बने और अपने अधिकारो को समझे। अपनी क्षमता पहचाने स्वरोजगार अपनाने के लिये बैंको से ऋण दिए जाने लगे। बाल विवाह को रोकने का प्रयास किया गया दहेज प्रथा पर अंकुश लगाया गया इतना ही नहीं यह भी तय किया गया कि महिलाओं को केवल 'लाभार्थी' अथवा 'आश्रिता' के रूप में नहीं देखा जाए अपितु उसकी भागीदारी राजनीति, सरकार तथा प्रशासन में भी होना चाहिए। अर्न्तराष्ट्रीय महिला दशक तथा विश्व महिला सम्मेलन में सम्पूर्ण विश्व के कुल कार्यों का 2/3 भाग कार्य महिलाएं करती है। लेकिन विडम्बना यह है कि कुल आय का 1/10 भाग ही उनके हिस्से में आता है तथा कुल सम्पत्ति का 1/100 भाग ही महिलाओं के नाम है। इस स्थिति को रोकना अत्यावश्यक है तथा स्त्रियों को भी शिक्षा, स्वास्थ्य रोजगार और सबल होने का पूर्ण अधिकार है। जब तक इन उद्देश्यों कि पूर्ति नहीं कि जाएगी तब तक महिला सशक्तिकरण के नाम का केवल ढोल बजकर ही रह जाएगा। महिलाओं की स्थिति वही की वही ज्यो कि त्यों रह जाएगी। महिला सशक्तिकरण के लिये महिलाओं की भागीदारी राजनीतिक क्षेत्रों में तथा प्रशासनिक क्षेत्रों में होना अनिवार्य है।

नारी सशक्तिकरण

संध्या शुक्ला
मनोवैज्ञानिक एवं परामर्शदाता बी0एड0
श्री शक्ति डिग्री कालेज,
साँखाहरी, घाटमपुर, कानपुर नगर

नारी का अब तक कोई व्यक्तित्व नहीं रहा है और पुरुष ने उसमें व्यक्तित्व को मिटाने का पूरा प्रयास किया है। अगर अतीत में झाँके तो नारी या तो किसी की बेटी होती है या बहन या पत्नी। विवाह के बाद वह या तो किसी की श्रीमती हो जाती है या किसी की बहू, उसके परिचय में भी कहते हैं श्रीमती खन्ना या श्रीमती मिश्रा अथवा फला की बहू आदि उसका कोई सीधा व्यक्तित्व समाज के समक्ष नहीं होता है बीच में पुरुष को लेकर ही उसका कोई अर्थ आता है। हजारों वर्षों तक नारी को शिक्षा नहीं दी गयी सिर्फ इसलिये कि शिक्षित होने से वह अपने पैरों पर खड़ी हो जायेगी यदि किसी के पैर के नीचे से जमीन खीचनी हो तो शिक्षा मत दो। उसका व्यक्तित्व कोई गति न कर पायेगा। इसलिये नारी को शिक्षा से वर्जित रखा गया। अशिक्षित नारी का मतलब है– अशिक्षित माँ, अशिक्षित पत्नी, अशिक्षित बेटी, अशिक्षित बहन मतलब जीवन के सब तलों पर अशिक्षित नारी खड़ी हो गयी शिक्षित पुरुष और अशिक्षित नारी के बीच इतना बड़ा फासला हो गया कि उसमें ताल–मेल बिठाना मुश्किल हो गया। परिणाम घर से लेकर बाहर तक सभी मामलों में पुरुष फेसला लेने लगा और नारी की स्थिति एक दासी की हो गयी। संवैधानिक उपबन्धों के अतिरिक्त महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिये अधिनियमों का प्रयास स्वतंत्रता संग्राम के दौरान किया गया। उनसे जुड़ी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में शुरूआती प्रयासों के तौर पर विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856), बाल विवाह निषेध अधिनियम (1925) और शारदा एक्ट (1929) अंग्रेजी हुकूमत द्वारा क्रियान्वित कर समाज को जागरूक बनाने में कुछ प्रयास थे। इन्ही सब विषयों को ध्यान में रखकर स्वतंत्रता के पश्चात महिला उन्मुख वातावरण के निर्माण पर बल दिया गया जिसमें न्यूनतम मजूदरी अधिनियम (1948) विशेष विवाह अधिनियम (1954), हिन्दू विवाह अधिनियम (1955), प्रसूति–सुविधा अधिनियम (1969) घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम (2005), महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, प्रतिषेध और निवारक) विधेयक (2012) और महिलाओं के खिलाफ जघन्य अपराध विधेयक (2013) आदि मुख्य है। इन संवैधानिक प्रावधानों का ही यह परिणाम रहा है कि आज महिला सशक्तीकरण की दिशा में हमारी आवाज को महत्व मिलता है और कोई भी समाज महिलाओं के प्रति सम्मानजनक व्यवहार करता है।

<u>महिल सशक्तीकरण के लिये विशेष कार्यक्रम–</u>

केन्द्र सरकार द्वारा महिलाओं के अधिकारों और उनमें समग्र विकास के लिये समय–समय पर निम्नलिखित योजनाओं को क्रियान्वित करती रही है।

1. कामकाजी महिलाओं के लिये हॉस्टल (1972–73) 2. रोजगार और प्रशिक्षण के लिये सहायता देने का कार्यक्रम (1986–87) 3. आशा योजना (2005) 4. परिवार परामर्श केद्र (1984) 5. किशोरी शक्ति योजना (2001) 6. बालिका प्रोत्साहन योजना (2006 – 07) 7. उज्ज्वला योजना 8. स्त्री शक्ति पुरस्कार 9. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं। इन कार्यक्रमों के अलावा भी महिला सशक्तीकरण से सम्बन्धित तमाम अन्य योजनायें भी चल रही हैं।

परिवर्तन की दृष्टि से नारी की परम्परागत छवि का विखण्डित होना, रूढ़ियों सही गली मान्यताओं, पुरुषजन्य विकृत सोंच को परिवर्तित करता है यह कही –न–कहीं स्वास्थ्य समाज के निर्माण की दिशा में अग्रसर होने का होता है।

5 Ways to Improve the Girls Education Status in Rural Area

Monika Gupta
Deptt. Home Science
Shri Shakti Degree College

Today our india is moving forward as a modern and developed country but even India's rapidly deteriorating sex ratio (2011 : 918 girls for 1000 boys) let the Indian government to initiate the "Beti Bacho, Beti Padhao" program in 2014, for the girl child's survival, safety and education. The role of three ministries involved-women and child Development, Health and family welfare, and Human resource development combined with the effort of the civil society and aware citizen can do wonder here. Here's how India can improve the status of the girl child education in rural area.

1.Awareness, Understanding and Action :-

The best way is to educate the children, orient the teacher, examine the text book and teaching-aids and ensure that the next generation grows up with new thinking, Institutional changes, needed in civil society, the media and judicial system in order to support women's policy agendas and to make the trasition from policy to practice.

2. To Provide 6 'S' to every girl Child :-

Shiksha	-	Education
Swasthya	-	Health
Samta	-	Equality
Samvedana	-	Sensitivity
Swavlamban	-	Self Reliance
Samajik Nyay	-	Justice

3.To Change the Mentality & Provide them Best Education :-

The most important factor is that we should consider changes in the favour of women and most of all we need respect for them. There are some factors like eve teaching, rape, honor killing, female foeticide all of them are the result of men not respecting women the only way a women can live without being judged by society is when she have a good career. Let them study and choose the career they want and will be surprised how good they can be even in the make dominating jobs.

4.To assess the Factor Affecting Low Levels Girl Child Education :-

"Beti Bachao Beti Padhao" and other girl child education initiatives will need firm accountability form the civil administration, Divisional, commissioners must be assessed for their ability in increasing girl child enrollment and must also be regularly checked for other factor that push girls out of school, including harasment, sanitation (lack of dedicated toilets for girl is known factor in pushing girl to dropout).

5. To Provide the Vocational Education to Every Girl :-

It is most important that women should be given vocational education so that their future could be secure then their parents will understand the value of girl education, and this factor can be improve the enrollment level of girl in the schools.

नारी के विरूद्ध अपराध पूरी दुनियाँ की आपबीती

ज्ञान भारती
बी0ए0 तृतीय वर्ष

महिलाओं के विरूद्ध अपराध पूरी दुनियाँ की आपबीता है। जिससे कोई भी देश अछूता नहीं है। आज कल हम घरों तथा आफिसों में इस तरह भी भाषा का प्रयोग करते हैं कि कहना भी बड़ा मुश्किल है। अश्लील भाषा के साथ–साथ लड़कियाँ तथा लड़के भी जुड़े है। यह एक ऐसी मानसिकता है जो यह दर्शाती है कि आज के इस आधुनिक युग में लड़कियाँ अपने को लड़कों के बराबर दर्शाने के लिये हर संभव कोशिश कर रही है। उसके लिये अभद्र भाषा का प्रयोग क्यों न करना पड़े। पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में जो वृद्धि हुयी उसे देखकर ऐसा लगता ही नही है कि समाज सभ्य हो रहा है। जहाँ एक ओर समाज का एक वर्ग अपनी बेटियों को पढ़ा लिखा कर आत्मनिर्भर बना रहा है। उसी समाज का एक वर्ग बेटियों को बोझ समझ रहा है जन्म से पहले ही खत्म कर देता है। महिला सुरक्षा के नाम पर कई कानून बनाये गये है। मीडिया में कई दिनों तक बहस चलती है लेकिन इन सब से महिलाओं के ऊपर हो रहे अपराध नही रूके।

कुछ नेता लोग नसीहत देते हैं कि महिलाओं को रात में नहीं निकलता चाहिए, छोटे कपड़े नहीं पहनने चाहिए, रेप रोकना है तो बचपन में शादी कर दो इन नेताओं से ये पूछिये कि जब 2 साल की बेटी का रेप हुआ था तो उसने किस प्रकार के कपड़े पहने थे।

जब पंजाब में कानून के रक्षक 15 साल की लड़की का रेप 3 महीने से कर रहे थे तब कहाँ गई थी इन नेताओं की नसीहत, बात छोटे कपड़ों की नही है, न ही रात के अन्धेरों की हैं! बात यहाँ पर सिर्फ मानसिकता की है, सोच बदलने की! कि किस तरह से महिलाओ को सुरक्षित एवं सशक्त बनाया जाए। जब किसी औरत का बलत्कार होता है तो थोड़ी से सहानुभूति तो दिखाई जाती है। उसके इन्साफ की आवाज उठाई जाती है। देश का भविष्य कहे जाने वाले छोटे बच्चों मुँह से माँ, बहन, बेटी की गालियाँ इस तरह से निकलती हैं जैसे रोज की सामान्य भाषा हो! बच्चे ये जानते हैं कि किसी को जलील करने के लिये या नीचा दिखाना है तो उसकी घर की महिलाओं पर आक्रमण करों, उसकी माँ बहन को गाली दो।

औरतों के लिये कहे जाने वाले खराब शब्दों में कुछ शब्द तो हमारे धर्म के ठेकेदारों की अमीरों की देन है। डायन प्रथा जों आज भी कई गाँवों में लागू है। आज भी महिलाओं को जंजीरों से बाँध कर रखा जाता है। उनको निर्वस्त्र घुमाया भी जाता है। डायन कहलाने वाली औरतों को जिन्दा जला दिया जाता है। यह सब धर्म की आड़ में किया जाता है। धार्मिक लोग इसे अपने गाँव और गाँवों की रक्षा के लिये की जाने वाली पूजा कहते हैं। क्या आज तक आपने कोई ऐसी भूत प्रथा का नाम सुना है, जिसमें पुरुषों की भलाई के लिये पुरुषों को जिन्दा जलाया जाता हो तथा पुरुषों को जंजीरों से बाँधकर रखा जाता हो, क्या पुरुषों को कभी निर्वस्त्र घुमाया जाता हैं नही।

यह खोखला समाज सिर्फ औरतों पर ही ऊँगली उठाता है, उन्हें ही जलील करता है लेकिन यह भूल जाता है कि उसमें उसकी जन्म देने वाली माँ भी शामिल होती है।

आज अगर समाज में जरूरत है तो औरतों को समान समझने की उनकों सम्मान की दृष्टि से देखने की, जिस दिन यह समाज औरतों को अपने समान समझने लगेगा, तो यह आधुनिक युग नही वैदिक युग के रूप परिवर्तित हो जायेगा।

महिला सशक्तिकरण

दीक्षा पाल
बी0टी0सी0 प्रथम सेमेस्टर

ऐ मेरे भगवान बता दे,
लड़की क्या इंसान नही।
लड़के का है मान जगत में,
लड़की का कोई मान नहीं।।

जिस घर में लड़का पैदा होता,
खुशियां खूब मनाते हैं।
नारी मंगल सोहर गाती,
गोले दागे जाते है।।

लड़के के स्कूल भेजते,
शिक्षा उसे दिलाते हैं।
बेचारी लड़की से घर के,
बरतन साफ करहते है।

लड़की गऊ बराबर होती,
जिस घर भेजी जाती है।
हाय दहेज के पीछे लड़की
अपनी जान–गवाँती है।।

लड़की थी झॉसी की रानी,
रण में जो संग्राम किया।
लड़की ही थी इन्दिरा गॉधी
जग में ऊँचा नाम किया।

अगर वही जो लड़की जन्मे,
तो उसका सम्मान नही।
ऐ मेरे भगवान बता दे
लड़की क्या इंसान नही।।

लड़के है सन्तान पिता की,
लड़की क्या सन्तान नही।
ऐ मेरे भगवान बता दें
लड़की क्या इंसान नहीं।।

क्या इस जग को किसी तरह,
लड़की का कल्याण नही,
ऐ मेरे भगवान बता दे
लड़की क्या इंसान नहीं।।

आज उसी लड़की का होता,
जग क्या अपमान नही।
ऐ मेरे भगवान बता दे,
लड़की क्या इंसान नहीं।।

नारी-शक्ति

अंकिता सचान
बी0टी0सी0 प्रथम सेमेस्टर

अरे अभी तक क्यों तुम रही पीछे,
तुम ही क्यों झुकती हो हर बार।
अरे जागों और पहिचानों अपनी नारी शक्ति,
तुम्हीं से टिका है यह सारा संसार।।

सारी शक्ति तो तुमसे है,
फिर किसका कर रही हो इंतजार।
तुम ही आदि शक्ति का अवतार
आगे बढ़ो और लो अपना अधिकार।।
अरे जागों और पहिचानों अपनी नारी शक्ति,
तुम्हीं से टिका है यह सारा संसार।।

सबका पोषण करने वाली,
क्यों देखे अपना शोषण हर बार।
बाते करता बड़ी–बड़ी पर,
कुछ न करता यह संसार।।
अरे जागों और पहिचानों अपनी नारी शक्ति,
तुम्हीं से टिका है यह सारा संसार।।

नहीं कोई आयेगा आगे,
करने के लिये तेरा उद्धार।
है पापी संसार यह सारा,
करना होगा इसका संहार।।
अरे जागो और पहिचानों अपनी नारी शक्ति,
तुम्हीं से टिका है यह सारा सांसर।।

रक्षक हो तुम्ही समाज की,
कैसे देख रही हो अपनी हार।
तोड़ के सारे नियमों को,
बदल डाला सारा संसार।।
अरे जागो और पहिचानों अपनी नारी शक्ति,
तुम्हीं से यह सारा संसार।।

दीपक बनकर दिखा रास्ता,
भटक रहा सारा संसार।
तू मानव की अभिनव सरिता,
बहा दे सारा भ्रष्टाचार।।
अरे जागो और पहिचानों अपनी नारी शक्ति,
तुम्हीं से टिका है यह सारा संसार।।

महिला सशक्तीकरण

स्वाती देवी

बी0टी0सी0 प्रथम सेमेस्टर

महिलाओं के रास्ते में लक्ष्य होते हैं लेकिन मूल्य भी होते हैं, विकास की प्रक्रिया होती है तथा उस प्रक्रिया से सीखना होता है।यह प्रक्रिया स्वयं में सशक्तीकरण है। इसमें समय का अलग अर्थ होता है । महिलाएं पूरे समुदाय की ओर देखती हैं और सबको शामिल करने का प्रयास करती हैं चाहे प्रक्रिया में देर क्यों न हो जाए। उनका लक्ष्य प्रमुख के बजाए समावेश, अन्तिम उद्देश्य के बजाए प्रक्रिया, व्यक्ति के बजाए समूह, अलगाव के स्थान पर 'एकीकरण' होता है।

महिला सशक्तिकरण एवं वर्तमान परिदृष्य

सारिका पाल

बी0टी0सी0 प्रथम सेमेस्टर

आज वर्तमान समय में देखा जाए तो चाहे व आफिसों में हो या घरों में इस तरह की भाषा का प्रयोग करते हैं कि कहना बड़ा मुश्किल लगता है। अश्लील भाषा का प्रयोग लड़कों के साथ–साथ लड़कियाँ भी करती हैं।

यह एक ऐसी मानसिकता है, जो यह दर्शाती है कि आज के इस आधुनिक युग में लड़कियाँ अपने को लड़कों के बराबर दर्शाने के लिये हर सम्भव कोशिश कर रही हैं।

पिछले कुछ वर्षों में जो महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में जो वृद्धि हुई है। उसे देखकर लगता ही नही कि समाज सभ्य हो रहा है। जहाँ समाज का एक वर्ग अपनी बेटियों को पढ़ाकर आत्म निर्भर बना रहा है। उसी समाज का एक वर्ग बेटियों को बोझ समझ रहा है। जन्म से पहले खत्म कर देता है। महिलाओं की सुरक्षा के लिये कई काननू बनाये गये हैं। कुछ नेता लोग नसीहत देते है कि महिलाओं को रात में घर से नहीं निकलना चाहिए। छोटे कपड़े नहीं पहनना चाहिए। जब किसी औरत के साथ बलात्कार होता है तो थोड़ी बहुत सहानुभूति दिखायी जाती है। उसमें इन्साफ की आवाज उठायी जाती है। लेकिन हर गली व मोड़ पर रोज न जाने कितने मासूमों के कपड़े उतारे जाते हैं। उनको न तो रोका जाता है और न ही सजा मिलती है।

जरा सोचिए अगर एक लड़का किसी लड़की को छेड़ता है तो इसके बाद उस लड़की की मदद करने वाले हर मर्द ने औरतों को जलील किया पर कोई विरोध नहीं हुआ, क्योंकि किसी को जलील करने के लिये महिलाओं को जलील किया जाता है।

आज पुरुष वर्ग को महिलाओं के प्रति मानसिकता को बदलना चाहिए कि किस तरह से बेटियों को सशक्त वं मजबूत बनाया जाए।?

महिला सशक्तिकरण क्यों आवश्यक है।

शबाना खातून

बी0टी0सी0 प्रथम सेमेस्टर

आज के समाज में नारी का बहुत सम्मान है क्योंकि नारी किसी से भी कम नही है क्योंकि आज के समय में नारी पुरुषों से कन्धा से कन्धा मिलाकर काम कर रही हैं क्योंकि उन्होंने निःसन्देह वह सब काम किया है और उससे आगे बढ़कर जो पुरुष काम करते हैं।

प्राचीन समय से लेकर आज तक नारी किसी से भी कम नहीं है। प्राचीन काल में गार्गी, विदुषी, रानी लक्ष्मी बाई, झल्कारी बाई, रजिया सुल्तान जैसी महान नारियों ने कभी भी सिर झुकने नहीं दिया।

आज के समय में बछेन्द्री पाल, कल्पना चावला, सायना नेहवाल, सानिया मिर्जा आदि लोगों ने इतिहास में नाम कमाया है इसीलिये तो कहा गया है, कि–

अगर बेटा वारिस है, तो बेटी पारस है।
अगर बेटा वारिस है, तो बेटी पारस है।
अगर बेटा वंश है, तो बेटी अंश है।
अगर बेटा आन है, तो बेटी गुमान है।
अगर बेटा संस्कार है, तो बेटी संस्कृति है।
अगर बेटा आग है, तो बेटी बाग है।
अगर बेटा दवा है, तो बेटी दुआ है
अगर बेटा भाग्य है, तो बेटी विधाता है।
अगर बेटा शब्द है, तो बेटी अर्थ है।
अगर बेटा गीत है, तो बेटी संगीत है।
जब इतनी कीमती है, बेटियाँ,
तो फिर क्यों खटकती हैं मन को बेटियाँ।
जबकि सबको पता है,
बेटों को भी जन्म देती हैं बेटियाँ।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा की आवश्यकता

अंकिता मिश्रा

बी0एड0 प्रथम वर्ष

ग्रामीण महिलाएं जो होती है वो रूढ़िवादी विचार धारा से बंधी होती है जिसके कारण वह आधुनिकता को नहीं अपना पाती है और वह जिस समाज में रहती है तो वहाँ के लोगों का शिक्षा का जो स्तर होता है। वह निम्न होता है। जिसमें वह समझती है कि उसे भी शिक्षित होना आवश्यक नही है। ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा को सुलभ बनाने के लिये महिलाओं का शिक्षित होना बहुत आवश्यक है क्योंकि जो आगे आने वाली पीढ़ी है उसको वह शिक्षित एवं जागरूक करने में अहम भूमिका निभांएगी।

जब महिला शिक्षित होगी तो वह अपने मूल्यों कर्तव्यों तथा अधिकारों के प्रति जागरूक होगी। अपने अधिकारों से वंचित न रहकर अपने अधिकारों का प्रयोग करेंगी। ग्रामीण महिलाएं अपने को कमजोर या लाचार न समझकर एक शश्क्त महिला बनकर समाज को आगे ले जाने में सहायक सिद्ध होगी स्वयं राष्ट्र निर्माण में भाग लेकर नारी जाति का पथ प्रदर्शन करेगी, क्योंकि आज की आधुनिक नारी घर तक न सीमित होकर समाज, राष्ट्र सेवा में बढ़–चढ़ कर पदार्पण कर रही है। नारियाँ वो इतिहास है जो पअने व्यक्तित्व अपनी ताकत व अपने ज्ञान से ग्रामीण क्षेत्रों में अशिक्षित महिलाओं की विचारधारा को बदल सकती हैं।

"Wrong Number"

प्रियंका उमराव

बी0ए0 तृतीय वर्ष

ट्रन–ट्रन .....!

फोन में मैसेज आने की घंटी बजी। मैने देखा– " Good Morning" इसके साथ एक जीवन की परिभाषा लिखी थी। जिस नम्बर से मैसेज आया था, वह अन्जाना लगा रहा था। किसी अन्जाने नम्बर से ऐसा मैसेज आने का क्या कारण था ?

क्या मैं उसे जानती थी ? इसी तरह के और न जाने कितने सवाल मेरे मन में एकदम से उमड़ने लगे, मुझसे सब्र न हो सका। मैने झट से फोन उठाना और Reply किया कि तुम कौन हो ?

मेरे मन में हलचल मची थी, मै लगातार अपने मोबाइल को देखती रही कुछ देर बाद, फिर से मोबाइल में मैसेज आने की टोन बजी। मैने झट से फोन ऊठाया और Massage box में देखा कि क्या उत्तर आया है, उसमें लिखा था– ''और कौन हो सकता है, जो तुम्हे मैसेज भेजेगा'' ये पढ़कर मैं अचरज में पड़ गयी, कि यह कौन है जो मुझे मैसेज कर रहा है, तभी लगातार मैसेजों की बौछार सी होने लगी।

''तुम अपना नाम और पता बताओ''

''मै तुम्हारे बारे में सबकुछ जानता हूँ, इसलिये मुझसे झूठ बोलने की कोशिश भी न करना, मै देखना चाहता हूँ कि तुम कितना सच बताती हो''

मेरा नाम भी लिखा था तो मैने सोचा कि शायद मेरा कोई रिश्तेदार हो, जो मुझसे मजाक कर रहा है। वरना कोई अन्जान मेरा नाम कैसे जान सकता है। मैने सबकुछ लिखकर भेज दिया और सच पूछों तो ये मेरी सबसे बड़ी गलती थी। मेरे परिवार के लोग रूढ़िवादी हैं इसलिये पढ़ने से भी रोका गया, यह सोचकर कि लड़की जाति है कहा अकेली पढ़ने जायेगी और आस–पास माहौल में कहीं बिगड़ न जाए, इसलिये मुझसे कहा गया था कि मैं फार्म को भर दू और पढ़ने न जाँऊ। मेरा तो बहुत मन था कि मै भी रोजाना कालेज जाँऊ। मेरे पिताजी की बदौलत मैं पढ़ सकी। मेरे पिताजी को मुझसे बहुत आशा थी कि मै उनका नाम रौशन करूँगी, और हो भी क्यों न मैं उनकी सबसे बड़ी बेटी थी, उन्होंने मुझे कभी अपने बेटे से कम नहीं माना था यों कह लो कि मुझे बेटा ही माना। उस लड़के का मैसेज आता रहा और मैं रिल्पाई करती रही। दो–तीन दिन के बाद मुझे ये एहसास हुआ कि मेरा उससे बात करने का कोई औचित्य नहीं है, मेरी आत्मा मुझे धिक्कारने लगी कि मैं, एक अन्जान व्यक्ति से बात कैसे कर सकती हूँ। मैं मानसिक तनाव के कारण कुछ चुपचाप सी रहने लगी।

उस लड़के का मैसेज आता रहा, मैने रिप्लाई करना बन्द कर दिया। मैं उसके इरादे नही जानती थी कि उसका मेरे मोबाइल पर मैसेज भेजने का क्या कारण था यही सोचकर मैं परेशान और परेशान होती जा रही थी। मैने अपने पिताजी को सारी घटना सच–सच बता दी। मरे पिताजी ने तुरन्त मोबाइल से कॉल किया और उससे बात की कि इस नम्बर पर आपको कॉल या मैसेज कुछ नहीं करना यह Wrong Number है यह कहकर फोन काट दिया और मुझसे कहा कि अगर तुम्हारे पास अन्जाने नम्बर से मैसेज आया था तो तुम रिप्लाई (जवाब) ही न करती, और अगर फोन आता तो उसे कह देती की Wrong Number है बात यही खत्म हो जाती।

मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे मेरे पिताजी का मेरे प्रति जो विश्वास था वो डगमगा रहा था। पिता जी ने कहा फोन को थोड़े दिन के लिये हमें दे दो ताकि तुम्हारा पढ़ाई में मन लग सके और ये गलती तुम दुबारा न दोहरा सको।

ये सुनकर मुझपर बिजली सी गिर गयी, दुख इस बात का नहीं था, कि मेरा मोबाइल ले लिया गया बल्कि दुख तो इस बात का था कि जो विश्वास मैने अपने पिताजी की आँखों में पहले देखती थी वो अब कम झलक रहा है उन्हें मुझ पर अब भरोसा न रहा था।

मेरे मन में सिर्फ एक ही बात गूँज रही थी कि क्या मैने इतनी बड़ी गलती की थी क्या जो मुझसे मेरा फोन ले लिया गया या इसलिये की मै एक लड़की हूँ।

क्या मेरी इस सच्चाई को किसी ने न देखा कि मैने खुद उनके आगे अपनी गलती मानी! क्यों मुझ पर ही आरोप लगाये गये ? आखिर क्यों ? क्योंकि मैं एक लड़की हूँ इसलिये क्या अगर ये गलती किसी लड़के से हो जाती तो उसके साथ भी ऐसा होता जो मेरे साथ हुआ, क्या उससे भी फोन छीन लिया जाता ? क्या उसपे भी आरोप लगाये जाते ? क्या उस पर भी बंदिशे लगाई जाती ? नहीं ! क्योंकि वो एक लड़का है। सदियों से ही नारी को ही क्यों बंदिशों की बेड़ियों में बांधा जाता है ?

नारी अभिशाप नहीं वरदान है

गरिमा देवी

बी0ए0 तृतीय वर्ष

हमारा समाज नारी को अभिशाप मानता है पर अगर सच्चाई ओर गहराई से विचार किया, जाये तो नारी किसी वरदान से कम नहीं है क्योंकि नारी के बिना इन्सान का जन्म हो पाना असम्भव है। इन्सान अपना वंश चलाने के लिये पत्नी चाहता है, जन्म लेने के लिये माँ चाहता है और राखी बंधवाने के लिये बहन भी चाहता है पर वह बेटी नहीं चाहता ऐसा क्यों ? जरा सोचिए एक बेटी ही किसी की माँ, किसी की पत्नी और किसी की बहन है फिर इन्सान बेटी क्यों नहीं चाहता। शायद इसलिये कि बेटी तो पराया धन होती है और पराये धन के लिये कोई अपना धन क्यों खर्च करेगा। शायद इसलिये कोई भी माँ–बाप बेटी को बेटे के समान नहीं मानते। चाहे वो घर के अन्दर की बात हो चाहे बाहर की बेटे की पूरी स्वतंत्रता दी जाती है पर बेटी को नहीं।

नारी सबकी खुशी के लिये अपने गम को छिपा लेती है। नारी ने कितना दर्द सह कर के भी इन्सान को जन्म दिया पर इसके बदले में इन्सारन ने नारी को क्या दिया वही अपमान, बेइज्जती, ठोकर, ताने। क्या यही इन्सान का नारी के प्रति कर्तव्य है कि वह उसके (जन्म देने का) अहसानो का बदला उत्पीड़न जैसे घिनौने कार्यों से चुकाये।

जिसका हमारे समाज को सम्मान करना चाहिए उसी का सब अपमान करते हैं। इन्सान इतना तक नहीं सोंचता कि जिसका मैं अपमान कर रहा हूँ। उसके बिना मेरा भी कोई अस्तित्व नहीं है नर–नारी दोंनो एक दूसरे के पूरक है नर के बिना नारी का और नारी के बिना नर का कोई अस्तित्व नहीं है।

जिसकी इन्सान की पूजा करनी चाहिए उसी को सब लाते मारते हैं। क्या नारी ने जन्म लेकर ही कोई पाप किया है। जो समाज इसे अभिशाप मानें और यदि ऐसा है तो नर भी अभिशाप होंगे क्योंकि उन्होंने भी नारी से ही जन्म लिया है। नारी के सामने बड़े–बड़े धर्मात्माओं ने अपना धर्म छोड़ दिया। आज का इन्सान उसी नारी को झुकाना चाहता है पर नारी सिर्फ अपनी मजबूरी और दूसरों की खुशी के लिये झुकी है फिर भी वह नर से बड़ी ही है चाहे वो लिखने में हो या बोलने में। नारी एक पूर्ण शब्द है जबकि नर एक अधूरा शब्द है। नारी में हमेशा श्रद्धा रही है चाहे वह रावण जैसे राक्षस को दान देने में हो, नारी ने अपने धर्म की लाज (मर्यादा) को बरकरार रखते हुए सबकी झोली में खुशियां डाली है। वह दूसरों की खुशी के लिये अपने दुःख की भुला देती है। वह खुद भूखी रहकर अपने बेटे को खिलाती है पर वाह री नारी की किस्मत– माँ तब भी रोती थी जब बेटा रोटी नहीं खाता था,

माँ अब भी रोती है जब बेटा रोटी नहीं देता है। इन्सान ने नारी को कभी अपने समान नजर से नहीं देखा। जबकि नारी से ही सृष्टि की नीव पड़ी। ये धरती भी नारी के बल पर ही टिकी हुई है। इसलिये इसे धरती माता कहा जाता है। घर के अन्दर नारी गृहणी के रूप में कल भी विद्यमान थी और आज भी है। घर के बाहर भी नारी ने जमाने के साथ अपनी प्रतिभा फैलायी है।

दुनियाँ में कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं हैं जहाँ नारी ने भाग न लिया हो। लेखनी के क्षेत्र में भी महादेवी वर्मा सुभद्रा कुमारी चौहान ने नारी के गौरव को बढ़ाया है। काव्य को नारी जगत का इतिहास कहा जाता है जबकि गद्य को पुरुष जगत का साहित्य। नारियों की आवाज हमेशी सुरीली, कोयल जैसी मीठी स्पष्ट रही है। चाहे वो रेलवे स्टेशनों में वकतव्य देने की बात हो चाहे रेडियों, चैनल आदि के माध्यम से समाचार सुनाने की बात हो। फिल्मी दुनियाँ में भी बेटियों ने अपनी प्रतिभा का झण्डा फहराया है। जैसे–नरगिस ने अपनी फिल्म 'मदर इण्डिया' में माँ की भूमिका निभाकर समाज को सच्ची ममता की झलक से अवगत कराया है। खेल के क्षेत्र में भी सानिया मिर्जा ने वर्षों से नारी के गौरव को बढ़ाया है। अभी ब्राजील के शहर रियो में ओलम्पिक प्राप्त करके (रजत पदक) प्राप्त किया है तथा साक्षी मलिक ने (कान्स पदक) प्राप्त किया है। फिर भी नारियों की समाज में पुरुषों की अपेक्षा कोई कीमत नहीं है। नारियों का हर जगह उत्पीड़न हो रहा है। शादी में भी नारी की देह की कीमत दहेज की रूप में तय की जाती है। क्या बेटी कोई बिकाऊ वस्तु है जिसका सौदा तय किया जाए। मै तो कहती हूँ कोई भी लड़की उस पुरुष से शादी ही न करे जो शादी में दहेज मांगता हो। जब सारे पुरुष अविवाहित रहेंगे और जनसंख्या घटती जायेगी तब वो नारी की कीमत को समझेंगे।

''अंश और वंश''

राखी पटेल

बी0एड0 प्रथम वर्ष

एक गाँव में बड़े जमींदार के घर में बेटा न होने पर उस घर के सभी सदस्य बड़े परेशान थे और समाज की तीखी आलोचनाओं का शिकार बनते थे।

पड़ोसी भी हमेशा ताने देते और कहते कि– बिटिया की माँ रानी, बुढ़ापें में भरेगी पानी।। ये सब सुनकर सब काफी परेशान होते थे। कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि आश्रम में जाकर किसी बेटे को गोद ले लें। क्योंकि बिना बेटे के पीढ़ी नहीं चलती और बुढ़ापें में सहारा कोई नहीं बनता। ये सब बाते सुनकर उन्हें लगा कि ये सब सही बोल रहे हैं और उन्होंने एक लड़का गोद ले लिया। धीरे–धीरे जब लड़का बड़ा हुआ तो उसे लड़के को बाहर पढ़ने को भेजा और वही अपनी बेटियों को गाँव के स्कूल में पढ़ाते रहें।

लगभग 10 वर्ष बाद जैसे–जैसे लड़का बढ़ता गया वैसे–वैसे उसकी जरूरतें बढ़ती गयी और उसके माता–पिता पुत्र मोह में उसकी जरूरतें पूरी करते गये और उस लड़के की आदतें बिगड़ गयी। जरूरत से ज्यादा पैसे मिलने के कारण वह जुआँ खेलना, शराब पीना सीख गया और गलत संगत में पड़ गया और उसने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और घर आ गया और उसी जगह उनकी तीनों लड़कियाँ पढ़ लिख गयी और दो की शादी भी हो गयी और जब उनका लड़का पढ़ाई छोड़कर घर आया तो घर वाले बहुत चिन्तित हुए। उन्होंने सोचा था कि हमारा बेटा बाहर से पढ़ लिखकर नाम रोशन करेगा तथा पैतृक उत्तराधिकारी बनेगा।

लेकिन सब उल्टा हो गया। वह रोज माता–पिता को मारता और अपमान करता उसी जगह छोटी बेटी पढ़ाई में बहुत तेज थी। कड़ी मेहनत से उसने पी0सी0एस0 का पेपर निकाल लिया और नौकरी करने लगी। उसने अपने माता–पिता का नाम रोशन किया। अब घर वालों को एहसास हुआ कि बेटियाँ घर की अमानत होती हैं। यह जरूरी नहीं कि बेटा ही नाम रोशन करे और उत्तराधिकारी बने। बेटियाँ भी माता–पिता का नाम रोशन कर सकती है।

बेटियों में भेदभाव करना गलत है।

महिला सशक्तीकरण

अंजली सचान
बी0टी0सी0 प्रथम सेमेस्टर

सही अर्थों में देखा जाये तो महिला सशक्तिकरण का अर्थ ही है – महिला को आत्म सम्मान देना। उसे आत्मनिर्भर बनाना। उसके अस्तित्व की रक्षा करना। 8 मार्च को ''महिला दिवस'' मनाकर या कानून या अधिनियमों को बनाकर महिला सशक्तिकरण नहीं किया जा सकता है। सरकार महिलाओं को अधिकार तो दे देती है पर जब तक वे अपनी सोच में या अपने अन्दर परिवर्तन नही लायेगी तब तक उसका घर से बाहर जाने का सफर आसान नहीं होगा। जब समाज में सामाजिक, पारिवारिक और वैचारिक बदलाव आयेगा, तभी शायद महिलाओं की समस्यायें कुछ कम हो पायेगी क्योंकि आज सिर्फ पुरुष ही दोषी नहीं है बल्कि महिलायें भी दोषी हैं। एक बहू आज भी अपने घर के सदस्यों से प्रताड़ित होती नजर आती है। आज बहू, बेटी, बहन अपने ही घरों में सुरक्षित नहीं हैं। सशक्तिकरण एक खेल मात्र ही बना रहेगा। सामाजिक उत्थान का आधार स्तम्भ है वह है 'नारी–शिक्षा'। शिक्षित व्यक्ति ही अपनी समानता और स्वतंत्रता के साथ–साथ अपने कानूनी अधिकारों का बेहतर उपयोग कर सकता है। अपने आत्म सम्मान की रक्षा कर सकता है। अपमानित होने से बच सकता है। शायद यही वजह रही है कि हमारे भारतवर्ष में महिला शिक्षण का प्रतिशत बहुत कम है, क्योंकि हमारे देश के शासन में बैठे लोगों के वंशज ये नहीं जानते थे कि महिला शिक्षित हो। वे जानते थे कि अगर नारी शिक्षित होगी तो वह अपना भला–बुरा समझ पायेगी।

महिला उत्थान के लिये भारत सरकार ने 1990 में ''राष्ट्रीय महिला आयोग'' का गठन किया इसमें सुरक्षित मातृत्व, समान पारिश्रमिक आदि कई महिला उत्थान को ध्यान में रखकर नियम बनाये गये थे। 2010 में 'मिशन पूर्ण शक्ति' की भी स्थापना हुयी। परन्तु पूरी तरह से लागू नहीं हुआ।

मेरा मानना है कि हमें सरकार द्वारा बनाये गये कानून का सहारा तो लेना है पर साथ–साथ अपने आप को शिक्षित कर, खुद के अस्तित्व को ऊपर उठाना है। अपने आत्मसम्मान को बनाये रखना है। आत्म निर्भय होकर आत्म रक्षा के लिये तैयार होना है। मानसिक तौर पर भले ही हम सशक्त है, पर शारीरिक तौर पर भी हमें सशक्त बनना होगा तभी सही अर्थों में हम 'महिला सशक्तिकरण' को सही दिशा दे पायेंगे।

स्त्री शक्ति

अल्मास खान
बी0सी0ए0

"आज नारियों की ताकत को पूरा विश्व मान रहा, नारी क्या है, क्या होती है यह भारत देश भी जान रहा।।"

सदियों से समाज तथा पुरुष–महिलाओं के ऊपर भेदभाव, हिंसा और बुरा वर्ताव करते आ रहे हैं। महिला सशक्तिकरण Women Empowerment महिलाओं को आगे बढ़ाने और स्वयं के निर्णय लेने के लिये बहुत बड़ा कदम है जिससे कि वे समाज में व्यक्तिगत सीमाओं को दूर कर आगे बढ़ सके और अपने विचारों को लोगों के सामने रख सके। इसके चलते नारियों की स्थिति प्रतिष्ठित एवं सम्मानित है।

तथ्य तो यह है कि नारी शक्ति का स्वरूप है। धैर्य, सहनशीलता कि प्रतिमा है, जिसमें माँ दुर्गा के अवतार में देवताओं को त्रास देने वाले राक्षसों का वध किया था।

" पुरुष जहाँ नाकाम हुआ,
नारी ने बल दिखलाया है।
दुर्गा–काली को ही देखों,
महिषासुर मार गिराया है।।"

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमानते तत्र देवता"

अर्थात् जहाँ नारी पूजी जाती है वहाँ देवताओं का वास होता है। प्राचीन काल के इतिहास में नारी का पद परिवार में अत्यंत महत्वूपर्ण था, न केवल परिवार व समाज के लिये नारी में धर्म निभाया बल्कि रण क्षेत्र में भी नारी परिता एवं साहस से भरी कहानियों से इतिहास भरा पड़ा है– नारी लक्ष्मीबाई, कस्तूरबा गांधी आदि । नारियों ने अपने जीवन के अमूल्य वक्त अपना की सुरक्षा के लिये लगा दिया।

"अंग्रेजों का जब दबदबा,
बढ़ने लगा तब अत्याचार।
तब दुर्गा–काली में लिया,
लक्ष्मीबाई का अवतार।।"

नारियों की कहानियाँ इतिहास तक ही सीमित नहीं न ही केवल रण भूमि तक बल्कि राजनीति के क्षेत्र में भी महिलाओं ने सम्मान कमाया है।

"विश्व की गंदी राजनीति से,
जनता सारी लाचार हुयी।
तब भारत में बन प्रधानमंत्री
इंद्रिरा गाँधी तैयार हुयी।

सहनशीलता, अंहिसा, भावुकता, प्रेम, की मूरत है घर–परिवार हो या समाज के प्रति कोई धर्म उसे बाखूबी ईमानदारी से निभाती है।

''पहले सबको परसे खाना, खुद झूठा बाद में खाती है। ऐसा भी अवसर होता है, जब बिन खाये सो जाती है।।''

''देश बने स्वर्ग से सुंदर,
इतना ही नारी को याद है।
इसलिये तो हर क्षेत्र में,
नारियों का बलिदान है।।''

WOMAN is the Companion of man, Gifted with equal MENTAL-CAPACITY.